बुलैटिन क्र 83/2017

कृषि मौसम परामर्श बुलेटिन
राज्य : मध्य प्रदेश
Agrometeorological Advisory Bulletin
State : Madhya Pradesh

वैधता– 18 अक्टूबर 2017 से 22 अक्टूबर 2017 तक

period :– 18.10.2017 to 22.10.2017

Next Update : 24.10.17
अगला नवीनीकरण : 24.10.17

जारी करने का दिन मंगलवार, 17 अक्टूबर 2017

Issued on TUESDAY, 17th OCTOER 2017

द्वारा : भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, भोपाल

Issued by : Meteorological Centre Bhopal

सौजन्य से

जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
राजमाता विजयाराजेय सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय ग्वालियर
तथा
कृषि विभाग ,मध्य प्रदेश शासन ,भोपाल

In collaboration with
JNKVV, Jabalpur, RVSKVV,Gwalior
and
Department of Farmers' Welfare and Agricultural Development, Bhopal, M.P.

Met Sub-divisions of the State

For Meteorological purposes, the State has been divided into two sub divisions

East M.P. consisting of Jabalpur, Satna, Panna, Seoni, Rewa, Sidhi, Katni, Annuppur, Singrauli, Balaghat, Umaria, Mandla, Dindori, Shahdol, Tikamgarh, Chhatarpur ,Chhindwara , Damoh ,Sagar, and Narsighpur districts

West M.P. consisting of Bhopal, Sehore, Raisen, Vidisha ,Hoshangabad, Harda, Morena, Bhind,Gwalior, Shivpuri, Guna, Sheopur, Ashoknagar, Jhabua, Alirajpur,Dhar, Datia, Ujjain, Indore, Mandsaur, Ratlam, Shajapur, Rajgarh, Dewas, Nimach, Khargone, Khandwa, Barwani, Burhanpur and Betul districts

Agro-climatic Zone of Madhya Pradesh

S. No.	Agroclimatic Zones	Districts	Agromet Field Units (AMFU)
1.	Kymore plateau & Satpura Hills	Jabalpur,Satna, Panna, Seoni, Rewa, Sidhi, Katni, Annuppur, Singrauli, Balaghat, Umaria, Mandla,Dindori, Shahdol	Jabalpur
2.	Vindhyan Plateau	Sagar, Damoh, Bhopal, Sehore, Raisen, Vidisha	Sehore
3.	Central Narmada	Narshinghpur, Hoshangabad,	Powarkheda
4.	Gird	Morena,Bhind,Gwalior, Shivpuri, Guna Sheopur, Ashoknagar	Morena
5.	Jhabua hills	Jhabua,Alirajpur,Dhar	Jhabua
6.	Bundelkhand	Datia, Tikamgarh, Chhatarpur	Tikamgarh
7.	Satpura Plateau	Betul and Chhindwara	Chhindwara
8.	Malwa Plateau	Ujjain, Indore, Mandsaur, Ratlam, Shajapur, Rajgarh, Dewas, Nimach	Indore
9.	Nimar Valley	Khargone,Khandwa,Barwani,Burhanpur,Harda	Khargone

Weather Summary for the period from 13.10.17 to 16.10.2017

Southwest monsoon has further withdrawn from the full State of M.P.

The upper air cyclonic circulation over North-East Arabian Sea & adjoining Konkan & Gujarat extended upto 3.6 km amsl persisted on 13th, shifted over North Konkan, South Gujarat region & neighbourhood extended upto 0.9 km amsl on 14th.

The upper air cyclonic circulation over East-Central Arabian Sea & neighbourhood shifted over East-Central & adjoining South-East Arabian Sea extended upto 1.5 km amsl on 13th.

The upper air cyclonic circulation as trough from East Bihar to Chhattisgarh extended upto 3.1 km amsl on 13th, shifted over Sub-Himalayan West Bengal to Chhattisgarh extended upto 1.5 km amsl on 14th, ran from Sub-Himalayan West of Bengal to coastal West of Bengal at 3.1 km amsl on 15th and became less marked on 16th.

Generally dry air prevailed over the State on 16th.

Highest Maximum Temperature:– 39°C was recorded at Sheopurkalan & Gwalior on 15th and at number of places (Khajuraho, Nowgaon, Datia & Gwalior)on 16th.

Lowest Minimum Temperature:– 16°C was recorded at Damoh on 16th.

Rainfall:- 09 cm recorded at Chhindwara on 14th.

Rainfall occurred at isolated places over the State on 13th & 14th and the State remained dry or mainly dry on 15th & 16th.

Day Temperatures were **3°C** above normal over North East M.P.; **2°C** above normal over North West M.P. and normal over South M.P..

Night Temperatures were **3°C** above normal over West M.P. & South East M.P. and normal over North East M.P..

Current synoptic conditions:- The well marked low pressure area lies over the Central and adjoining South Bay of Bengal extending upto 5.8 km above mean sea level. It is likely to concentrate into the Depression during the next 24 hours. It is very likely to move North-Westwards reaching North Andhra Pradesh and adjoining South Odisha coast by 19th October, 2017.

Warning (for next 24 hrs):- NIL.

Part-II:- Agroclimatic zonewise/ Agrometeorological Advisories

MALWA PLATEAU

	अवस्था	सलाह
चना	चने की फसल के लिए खेत की तैयारी	किसान चने की बुवाई इस सप्ताह कर सकते है। बुवाई से पूर्व मृदा में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। छोटी एवं मध्यम आकार के दाने वाली किस्मों के लिए 60–80 कि.ग्रा. तथा बड़े दाने वाली किस्मों के लिए 80–100 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई 30–35 सें. मी. दूर कतारों में करनी चाहिए। बुवाई से पूर्व बीजों को राइजोबियम और पी.एस.बी. के टीकों (कल्चर) से अवश्य उपचार करें। चने की बोनी के लिए उकठा प्रतिरोधी प्रजाती जैसे (जे जी 130, जे जी 218, जे जी 11, जे जी 16 एवं जे जी 06) करें।
फल	पौध रोपड़ अवस्था	नींबू वर्गीय फलो मे केंकर की रोकथाम के उपाय करे। पपीता मे तना सड़ान के नियंत्रण के लिए बोर्डो मिक्सचर का उपयोग करे। अमरूद मे तना छेदक के नियंत्रण के उपाय करे अमरूद, अनार ओर नीम्बू की कटई एवम छटई करे. रस चूस्ने वाले कीट के नियंत्रन के लिये नीम का तेल 5 मिली /15 लीटर पानी मे मिलाकर छिड़काव करे।
सब्जियां और मसाले		
आलू/मटर/लहसुन / मिर्च / टमाटर	पौध अवस्था	• इस मौसम में किसान मटर की बुवाई कर सकते है। बुवाई से पूर्व मृदा में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। बीजों कवकनाशी केप्टान या थायरम @2.0 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से मिलाकर उपचार करें उसके बाद फसल विशेष राईजोबियम का उपचार करें । गुड़ को पानी में उबालकर ठंडाकर ले और राईजोबियम को बीज के साथ मिलाकर उपचारित करके सूखने के लिए किसी छायेदार स्थान में रख दें तथा अगले दिन बुवाई करें। • इस समय लहसुन की बुवाई कर सकते है। बुवाई से पूर्व मृदा में उचित नमी का ध्यान अवश्य रखें। उन्नत किस्में – जी-323, जी-282. खेत में देसी खाद और फास्फोरस उर्वरक अवश्य डालें। • यह समय ब्रोकली, फूलगोभी तथा बन्दगोभी की पौधशाला तैयार करने के लिए उपयुक्त है। पौधशाला भूमि से उठी हुई क्यारियों पर ही बनायें। • मिर्च तथा टमाटर के खेतों में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। यदि प्रकोप अधिक है तो इमिडाक्लोप्रिड़ @ 0.3 मि.ली. प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें । भिंड़ी, मिर्च तथा बेलवाली फसल में माईट, जैसिड़ और होपर की निरंतर निगरानी करते रहें। अधिक माईट पाये जाने पर इथिआन @ 1.5 2 मि.ली./ लीटर पानी तथा जैसिड़ और होपर कीट के रोकथाम के लिए डाईमेथोयट कीटनाशक 2 मि.ली./ लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
पशुपालन		
पशुपालन	पशुओ को साफ एवं ताजा पानी दिन मे दो बार दे, साथ ही साथ हरे चारा दे। बाहरी परजीवी से बचाव के लिए ब्यूटोक्स का उपयोग करे। पशु शाला की नियमित सफाई करे	

	1 लीटर पानी मे 5 मिली फिनायल मिलाकर फर्श की सफाई करे।
मुर्गी पालन	मुरगियों मे रानी खेत बीमारी के नियंत्रण के लिए टीका लगवाए चूजो को 7 दिन की अवस्था पर टीकाकरन करे। मुर्गे एवं मुरगियों मो मिनरल मिक्सचर तथा साफ एवं ताजा पानी दे।
बकरी पालन	बकरियो मे पी पी आर रोग के नियंत्रण के लिए टीका लगवाए तेज धूप से बकरियो की सुरक्षा करे,बकरियो को हारा चारा साफ पानी एवं सूखे स्थान मे बांधे एवं परजीवी से बचाव के उपाय करे साफ एवं ताजा पानी दिन मे तीन बार दे, साथ ही साथ हरे चारा दे।

GIRD

सामान्य सलाह		संभावित मौसम पूर्वानुमान को देखते हुए इस समय सब्जियों आदि में आवश्यकतानुसार सिचाई करें व पकी हुई फसलों की कटाई गहाई का कार्य करें तथा खाली हो रहे खेतों की जुताई कर रवी फसलों की बोनी हेतु तैयार करें।	
		अवस्था	**सलाह**
मुख्य फसलें	सरसों	बुबाई की अवस्था	सरसों की बोनी हेतु खेतों में नमीं की कमी होने पर पलेवा कर बोनी करें। सरसों की बोनी हेतु उपयुक्त समय है अतः सरसों की उन्नत किस्मों का चयन करें व बोनी पूर्व बीजोपचार अवश्य करें। बीजोपचार हेतु कार्बान्डाजिम 3 ग्राम दवा/किग्रा बीज की दर से या मैटालैक्जिल (एप्रोन एस डी–35) 6 ग्राम दवा/किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बोनी करें।
	तिल, सोयाबीन व बाजरा	पकने की अवस्था	संभावित मौसम पूर्वानुमान को देखते हुए इस समय पकी हुई फसलों जैसे– तिल सोयाबीन व बाजरा आदि की कटाई गहाई का कार्य करें।
	अरहर	फूल फली बनने की अवस्था	अरहर की फसल इस समय फूल व फलियां बनने की अवस्था में है अतः इस समय फली छेदक कीट (पोड बोरर) की संम्भावना हो सकती है अतः दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु ट्राइजोफास या क्यूनालफास 750 मिली दवा 10–10 दिन के अन्तराल से दो वार प्रति हैक्टर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।
	चना व मटर	बुबाई की अवस्था	चना व मटर की बोनी हेतु मटर के लिए उन्नत ाील किस्में जैसे–प्रका ा, विकास व रचना व चना के लिये उन्नत ाील किस्में जैसे– जे.जी. 16, जाकी. 9218 व आर. वी. जी–2 आदि किस्मों का चयन कर क्रय करें व बीजोपचार हेतु 2 ग्राम थायरम + 1 ग्राम कार्बान्डाजिम दवा/किग्रा बीज की दर से उपचारित कर बोनी करें।
सब्जियां	टमाटर व मिर्च	वानस्पतिक वृद्धि अवस्था	संभावित मौसम में टमाटर व मिर्च में इस समय लीफकर्ल रोग की संभावना हो सकती है अतः दिखाई देने पर इसके प्रवन्धन हेतु पीले चिपचिपे प्रपंच लगावें तथा थायोमिथाक्जाम 25 डी जी 100 ग्राम दवा प्रति हैक्टर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिडकाव करें।
पशुपालन	गाय व भैंस		इस समय अधिकतर प ुओं (गाय व भेंस) के ब्याने का समय है अतः पशु के ब्याने के बाद 1 घण्टे के भीतर पैदा होने वाले शिशु को प्र्याप्त मात्रा में (नवजात शिशु के भार का 1/10 भाग) खीस पिलावें।

KYMORE PLATEAU &SATPURA HILLS

सामान्य सलाह	• खाली खेतों की जुताई करें तथा उचित तापक्रम (25.28 ^{0}ब) होने पर आगामी फसल तोरिया तथा मटर की बोनी प्रारम्भ करें। • पूर्वी मध्य प्रदेश में छुटपुट वर्षा की संभावना है।

सोयाबीन मूँग, उड़द	• सोयाबीन मूँग एवं उड़द फसलों की कटाई के पश्चात शेड के नीचे सुखाऍं । वर्षा की स्थिति को देखते हुए कटी फसलों को नमी से बचाऍं ।
धानः	• खेतों में वर्षा जल को संरक्षित करने हेतु मोघों को बंद कर दें। • पर्ण धब्बा रोगों की निगरानी हेतु फसल का सतता निरीक्षण करते रहें एवं इनका प्रकोप होने पर नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करे। •
आरहर	• फसल में आवश्यकतानुसार नीदा निंयत्रण अपनाये खेतों आवश्यकतानुसार जल निकास करें।
फलदार वृक्ष	• वृक्षों में कीड़ो एवं रोगों से बचाव हेतु निकटपत कृषि विज्ञान केन्द्र के वस्तु विशेषज्ञ से संपर्क करें । दवा का समुचित मात्रा में उपयोग विशेषज्ञ की देख रेख में करें। • वर्षा उपरांत अमरूद, नीबूं एवं अनार में खाद डलवाऍं।
सब्जियां	• भिन्डी मिर्च टमाटर वैगन में इस समय रस चूसक कीट की सम्भावना हो सकती है। अतः दिखाई देने पर इसके नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 750 एम.एल दवा प्रति हेक्टेयर 500 से 600 लीटर पानी में घोल बनाकर 10–10 दिन के अन्तराल पर मौसम साफ होने पर छिड़काव करें। • अधिक नमी के कारण सफेद मक्खी की निगरानी हेतु पीला चिपचिपा प्रपंच लगाऍं। • सब्जियों में मीली बग कीट के बचाव हेतु सर्वागीण कीटनाश्क डालें । अधिक जानकारी हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र से सपर्क करें।
पशु एवं मुर्गी पालन	• आसमान में बादल रहने पर मुर्गी घरों में प्रकाश की अवधि बढ़ाऍं ताकि अण्डा उत्पादन में गिरावट न हो तथा वरसात में बिछावन को सुखा बनाए रखने की यथा संभव व्यवस्था करें। • बरसीम चारा की बुवाई हेतु खेतों की जुताई वर्षा उपरांत करें।

JHABUA HILLS

आगामी पांच दिनो के लिये कृषि परामर्श :– जिले मे आसमान मे मध्यम से मध्यम घने बादल रहने, तापमान सामान्य रहने व वर्षा नहीं होने की संभावना है इसे देखते हुए किसान भाई पककर तैयार फसल की कटाई शीघ्रता से कर खलिहान मे धूप मे सुखाकर गहाई करें। खरीफ फसलों की कटाई उपरांत खाली हुए खेतों मे उपस्थित नमी को देखते हुए खेत तैयार चना व सरसों की बुआई करें। रवी फसलो के बीज की साफ–सफाई कर उनके अंकुरण प्रतिशत की जॉच करें। कपास की फसल मे रसचूसक कीट के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड या थायोमिथाक्सिम दवा 0.35–0.45 ग्राम/ली. की दर से छिडकाव करें।

फसल	कीट / व्याधि	कृषि कार्य परामर्श
मक्का (पकने की अवस्था)		पककर तैयार मक्का के भुट्टे की तुडाई कर व खलिहान मे धूप मे सुखाकर गहाई करें। शेष अवशेष की कटाई कर पशुओ को चारे के रूप मे खिलाए।
सोयाबीन (पकना)		पककर तैयार फसल की कटाई करें व खलिहान मे धूप मे सुखाकर गहाई करें।
चना (बुआई)	चना की बुवाई से पहले 2 ग्राम थायरम एवं 1 ग्राम कार्वेण्डाजीन प्रति किग्रा बीज से उपचारित करे फिर 5 ग्राम राइजोबियम एवं 5 ग्राम पीएसबी कल्चर प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करे।	रवी फसल चना की खेती हेतु खेत तैयार कर बुआई करें। चना की उपयुक्त किस्में– जेजी–11, जेजी–16, जेजी–130, जेजी–218, जाकी–9218 आदि। बीजदर – 30 किलो/एकड रखे।
सरसो (बुआई)	सरसों की बुवाई से पहले 1 ग्राम कार्वेण्डाजिम रम एवं 2 ग्राम मेन्कोजेब प्रति किग्रा बीज से उपचारित करे ।	खेतों मे उपस्थित नमी को देखते हुए खेत तैयार कर सरसों की बुआई करें। उपयुक्त किस्में– आरएच–749, आरएच–406, एनआरसीएचबी–101, आईजे– 31, पूसा जयकिसान, आरव्हीएम– 1, आरव्हीएम– 2

		आदि की बीजोपचार कर बुआई करें। बीजदर – 2 किलो/एकड रखे।
फलबृक्ष	पपीता मे तना सडन रोग की रोकथाम के लिए बोर्डो पेस्ट या तांबा युक्त फफूदनाशक दवा का प्रयोग 10 दिन के अंतराल से करें। निम्बूवर्गीय पौधो मे कैंकर रोगग्रस्त शाखाओं की कटाई कर बोर्डो मिश्रण का छिडकाव करें।	
सब्जियॉ	रसचूसक कीट के नियंत्रण के लिये इमिडाक्लोप्रिड या थायोमिथाक्सिम दवा 0.35–0.45 ग्राम/ली. की दर से छिडकाव करें। टमाटर, भिण्डी, मिर्च, बैगन आदि मे प्ररोह एवं फलछेदक इल्ली की रोकथाम के लिए ट्रायजोफास दवा 2.0 मिली/ली का छिडकाव करें।	बरसात की सब्जियों मे अनुशंसित उर्वरक की मात्रा दें। भिण्डी, बैगन एवं हरी मिर्च की समय पर तुडाई कर ग्रेडिंग कर बाजार मे बेचें। शीतकालीन सब्जियों हेतु नर्सरी डाले, सब्जी हेतु हरी मटर की खेती हेतु खेत तैयार कर बुआई करें।
अदरक एवं हल्दी	प्ररोह छेदक इल्ली की रोकथाम के लिए ट्रायजोफास दवा 2.0 मिली/ली का छिडकाव करें। लहसुन की बुआई का उपयुक्त समय है। उन्नत किस्म– जी 282, जी 223 की बुआई करें।	
पशु/पक्षी	पशुओं को साफ, सूखे एवं हवादार स्थान मे रखें। पशुओं को मक्खी–मच्छर से बचाव हेतु समय– समय पशुशाला मे फिनाइल का छिडकाव करें। पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलाए। मुर्गी घर के बिछावन के गीला होने पर समय पर पलटे।	पशुओं को प्रतिदिन 25.0 किलो प्रति पशु हरा चारा, संतुलित आहार एवं मिनरल की आपूर्ति हेतू 50 से 60 ग्राम प्रति पशु के हिसाब से खुराक दे। हरे चारे हेतु बरसीम की बुआई की तैयारी करे।

NIMAR VALLEY

फसल	सलाह
सब्जीयॉ/फल/ फसलें	• सब्जियों में रस चूंसकं कीटों की रोकथाम के लिए नीम तेल 50 मिली./पम्प का छिड़काव करें। • सोयाबीन की फलियों का रंग बदलने पर त्वरित सोयाबीन की कटाई करे एवं दो–तीन दिन धूप मे सुखाने के पश्चात गहाई करें अथवा ढेर लगाकर तिरपाल से ढक दे। • कपास की फसल में (90 दिन की अवस्था में) यूरिया की 20 किलो/एकड़ मात्रा का उपयोग जड़ क्षेत्र में 6 इंच गहराई पर करें। • अरहर को मेकनी से बचाने हेतु फूल की अवस्था पर प्रोपेनोफास–50 या डायमिथोएट–30 की 30 मिली मात्रा/पम्प के हिसाब से छिड़काव करें।
पशुपालन	पशुओं को किलनी एवं जूं से रक्षा हेतु मेलाथियान/क्लीनर/ब्यूटाक्स का 2 मिली/लीटर पानी में घोल कर उनके शरीर के ऊपर लगाएं। दवा लगाने के बाद पशुओं के मुंह पर मुशीका लगाएं।

VINDHYAN PLATEAU

आगामी पांच दिनो (120 घण्टे) के लिये कृषि परामर्श : आगामी दिनों में आसमान में हल्के घने बादल से मध्यम घने बादल छाये रहेंगे, हवा की दिशा प्रारम्भ में दक्षिण पश्चिम से एवं बाद के दिनों में उत्तर से तथा पश्चिम से रहेंगी । तीन दिन बाद हल्की बारिश होने का अनुमान है। दिन के तापमान में गिरावट एवं रात्रि के तापमान में उतार – चढाब रहेगा। हवा की गति सामान्य से अधिक 2 से 9 किलो मीटर प्रति घण्टा रहेगी । अतः पकी फसल की तुरन्त कटाई करें और खलिहान में फसल को सुरक्षित रखें तथा उचित नमी पर मडाई एवं भण्डारण करें।

* किसान भाई अपने खेतों की तुरन्त जुताई करें। और इसी नमी पर रबी सीजन की बोबाई करें।
* आगामी रवी फसलों की बीज का चयन कर बुबाई की तैयारी करें। उन्नत बीज एवं आदानों की समुचित व्यवस्था करें।

रबी फसलों की	1. गेंहॅ की उन्नत किस्में (अ) पूर्ण सिंचित, किस्में जैसे– जे.डब्ल्यू –1203, जे.डब्ल्यू –1215,एच.आई.–1544

तैयारी	आदि। (ब) अर्ध सिंचित, (1–2 सिंचाई) किस्में जैसे–जे.डब्ल्यू–3288, जे.डब्ल्यू –3211,जे. डब्ल्यू –3020,एच.आई.–1531 आदि (स) असिंचित,किस्में जैसे– जे.डब्ल्यू –3288, जे.डब्ल्यू–3173, 2. चने की उन्नत किस्में– बीजोपचार फफूँदनाशक (थाइरम 1.5 ग्राम+कार्बेन्डाजिम 1.5 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करने के बाद जैव उर्वरक राइजोबियम एवं पी.एस.बी. से निवेशित करके करें। आर.व्ही. जे 202, जे.जी.–130, जे.जी.–11, जे.जी.–315, जे.जी.–16, जाकी – 9218 आदि। तथा काबुली चने में काक –2 तथा जे.जी.के.–1 आदि की बीज की व्यवस्था करें। 3. मसूर की उन्नत किस्में– आर.व्ही.एल.–31, जे.एल.–2 आदि के बीज की व्यवस्था कर बुबाई करें।
बीजोपचार	1. चना,मसूर,मटर आदि दलहन फसलों में बीज को फफूँदनाशक दवा से उपचारित करने के उपरान्त जैव उर्वरक राइजोबियम कल्चर 2 से 3 ग्राम + पी. एस. बी. कल्चर 5 ग्राम गेंहॅ आदि में एजोटोबैक्टर 5 ग्राम प्रति किलो बीज उपचारित कर, उपचारित बीज पर 1 ग्राम अमोनियम मोलिब्डेट प्रति किलो बी के मान से मिलावें। ध्यान रहे कल्चर का गाढा घोल बीज पर लगावें पानी की मात्रा उतनी ही लें जिससे कल्चर की पतली परत बीज पर चढ जावे इसके बाद बीज को छायादार स्थान में सुखाकर बोनी के लिए उपयोग करें। मोलिब्डेनम के उपयोग से चने की बढवार अच्छी होती है तथा फसल पौधे बलवान बनते हैं जिससे विपरीत परिस्थिति (पाला आदि)का फसल पर कुछ हद तक प्रभाव कम पडता है एवं उपज अधिक मिलती है। बीजोपचार यंत्र या मटके आदि में भरकर उपचारित करें। 2. सभी फसलों को बीमारियों से बचाव के लिए बीजोपचार अवश्य करें इसके लिए 2 ग्राम थायरम तथा कार्वेन्डिज्म एक ग्राम कुल तीन ग्रम प्रति किलो बीज के मान से उपचार करें। गेहूँ में एजोटोबेक्टर या एजोस्प्रिलमएवं पी.एस. बी. कल्चर 5–5 ग्राम।
उद्यानिकी	1. अमरुद एवं बेर में फल मक्खी कीट की रोकथाम करें। सिंचाई हेतु थाला बनाकर खाद एवं उर्वरक दें। 2. टमाटर, मिर्च, बैंगन, पत्तागोभी एवं फूलगोभी आदि रवी मौसमी सब्जियों की नर्सरी बनाकर पौध तैयारी करें। 3. प्याज के लिए किसान उन्नत किस्म का बीज एवं खाद की व्यवस्था कर नर्सरी बनाकर पौध तैयार करें। 4. आलु की खेती के लिए बुबाई सितम्बर माह के अन्तिम सप्ताह से प्रारम्भ करें। 5. लहसुन की खेती के लिए बीज की व्यवस्था करें एवं खेत की तैयारी कर बुआई करें।
पशु, बकरी, मुर्गी एवं मछली पालन	1. पशुओं के हरे चारे के लिए जवाहर बरसीम जे.बी.–1, जे.बी.–5/ बुन्देल बरसीम–3 / वरदान तथा जवाहर जई–1/जे.एच.ओ–822 तथा आनन्द–2, टी–9 आदि बोऐं। 2. बकरियों में पी.बी.आर. का टीकाकरण अवश्य करवाऐं। 3. मौसम को देखते हुए मुर्गियों में कोक्सीडियोसिस बीमारी के प्रकोप के आसार हैं। बचाव के लिए सफाई रखें एवं किलनी या चीमडी के नियंत्रण के लिये मैलाथियान दवा 3 मि.ली.प्रति लीटर के हिसाव से छिडकाव करें। 4. अनावश्यक जीव जन्तुओं तथा अवांछनीय मछलियों की सफाई करें। तथा खाने वाले पंछियों से सुरक्षा करें।

कृते निदेशक